Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

उपमा कालिदासस्य

उमेश चन्द्र मिश्र

प्रवक्ता (पी.जी.टी.)-संस्कृत

जे.बी.सी.+२ विद्यालय ,जामताड़ा ,झारखंड

शोध आलेख सार – महाकवि कालिदास की उपमाएं अद्भुत, अलौकिक, प्राकृतिक, सजीव, आलंकारिक, स्वर्गीय आनंद से युक्त, मानवीय मनोज्ञता, हृदय भावो की प्रधानता, प्रांजलता, आदर्शरूपता, संगीतात्मकता, अकृत्रिमता ,मनोरमता एवं कवित्व की निर्मल धारा से युक्त होने के कारण बरबस ही लोगो को अपनी ओर ध्यानाकृष्ट कर लेती है।

मुख्य शब्द– उपमा, कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तल, रघुवंशम्।

'उपमा कालिदासस्य नोत्कृष्टेति मतं मम' अर्थात किसी विद्वान् ने कहा कि मेरे विचार से उपमा में कालिदास से बढ़कर कोई नही हैं । निश्चित रूप से उनकी रचनाओं को देखकर तो निःसंदेह यही लगता है ऐसी अनुपम उपमा अन्यत्र कहीं नही है। कालिदास के उपमायुक्त श्लोकों को पढकर महाकवि गेटे ने कहा था कि शकुन्तला के तरुण सौन्दर्य ने मंगलमय परिणति सफलता प्राप्त करके मर्त्य को स्वर्ग के साथ मिला दिया है।

अभिज्ञानशाकुन्तल के द्वितीय अंक में राजा दुष्यंत अनिन्द्य सुन्दरी शकुन्तला को देखकर शिखरिणी छन्द में कहा कि-

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररूहै
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादित रसम्|
अखण्डं पुण्यानां फलामिव च तद् रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः ||[1]

अर्थात शकुन्तला का निष्कलंक सौन्दर्य न सूंघा गया फूल है, न नाखूनों से कटा हुआ कोमल पत्ता है ,न विधा हुआ रत्न है ,जिसके रस का आस्वादन नही किया गया है ऐसा नया मधु है और

पुष्पों का अखंडित फल सा है। पता नही परमात्मा किसको उसका उपभोक्ता बनाएगा। महाकवि कालिदास ने शकुन्तला की प्रकृति के माध्यम से उपमा देकर और भी रमणीय बना दिया है।

कालिदास वैदर्भी रीति के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते है और उनके काव्यों में प्रसाद गुण की प्रधानता पाई जाती है। प्रसाद गुण के कारण अर्थ बोध भी शीघ्र हो जाता है। इस प्रकार वैदर्भी एवं प्रसाद गुण से युक्त कविताओं में एक से बढ़कर एक उपमाएं दी गई ही। रघुवंश के षष्ठ सर्ग में इंदुमती के स्वयंवर में उपस्थित राजाओं की दशा का वर्णन करते हुए कविकुल शिरोमणि कहते है कि –

संचारिणी दीपशिखेवरात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिम्बरा सा|

नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः||[2]

अर्थात जिस तरह रात में बढ़ने वाली दीपशिखा राजमार्ग में बने हुए जिस महल को पारकर आगे बढ़ जाती है तब वह महल अन्धेरा से व्याप्त हो जाने के कारण शोभारहित हो जाता है। उसी तरह स्वयंवर में इंदुमती जिस जिस राजा को छोड़कर आगे बढ़ जाती थी तो वह राजा उदासीन हो जाता था। दीपशिखा एवं महल से दी गई इस सुंदर उपमा के लिए महाकवि कालिदास को दीपशिखा की उपाधि से अलंकृत किया गया ।

महाकवि ने अभिज्ञानशाकुन्तल में शकुंतला का वाह्य सौन्दर्य प्रकृति के भिन्न भिन्न अलंकारों से सुसज्जित किया था, जो वास्तव में प्रत्येक घटना को सजीव कर देने वाला था ।अभिज्ञानशाकुन्तलम् के द्वितीय अंक में राजा दुष्यंत कहते है कि 'में मनः पुरः शैले प्रतिहतं स्रोतो वहः स्रोतो यथा द्वैधी भवति' अर्थात मेरा मन सामने पहाड़ से रुके हुए नदी के प्रवाह तुल्य दुविधा में पड़ गया है। इस प्रकार ऐसी प्राकृतिक घटनाओं का उपमा के माध्यम से ऐसा सजीव चित्रण किया गया है कि व्यक्ति की मनोदशा को अच्छी तरह समझा जा सकता है। अभिज्ञान शाकुन्तल के तृतीय अंक में कामपीड़ित शकुन्तला को देखकर दुष्यंत कहता है –

'शोच्या च प्रियदर्शना च मदनक्लिष्टेय मालक्ष्यते ||

पत्राणामिव शोषणेन मरुता ,स्पृष्टा लता माधवी ||[3]

अर्थात कामपीड़ित शकुंतला पत्तो को सुखाने वाली हवा से छुई हुई माधवी लता के तुल्य शोचनीय व दर्शनीय दिखाई दे रही है, यहाँ कामपीड़ित शकुंतला की उपमा माधवी लता से देना महाकवि कालिदास की उपमा विशेषज्ञता को दर्शाता है।

कालिदास की उपमाएं असाधारण एवं मनोरम है। कही प्रकृतिक उपमा है तो कही दार्शनिक उपमा, कही लिंग साम्य है तो कही भाव साम्य है ,इस प्रकार सभी में अनुपम समन्वय है। गर्भवती शकुंतला को छिपी हुई अग्नि से युक्त शमी वृक्ष के तुल्य बताया गया है –

'दुष्यन्ते नाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।

अवेहि तनयं ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव'।।

रघुवंशम् में एक दार्शनिक उपमा में बताया गया है की जिस प्रकार अव्यक्त से बुद्धि उत्पन्न हुई उसी प्रकार सरयू नदी भी उसी मानसरोवर से निकली है जिसके स्वर्ण कमलों का पराग यक्षो की स्त्रियाँ अपने स्तनों में लगाती है।

पयोधरैः पुण्यजना.नानां निर्विष्ट हेमाम्बुजरेणु यस्याः |

ब्राह्मं सरः कारणमाप्तवाचो बुद्धेरिवाव्यक्तमुदाहरन्ति||[4]

कुमारसम्भव में पार्वती के सुन्दर मुख को देखकर श्री शंकर का धैर्य उसी प्रकार लुप्त हो रहा था, जिस प्रकार पूर्णिमा के चंद्रोदय से समुद्र का धैर्य लुप्त होता है।

हरस्तु किंचित् परिलुप्तधैर्यस्चंद्रोदयारम्भ इवाम्बुराशीः|

उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे व्यापारयामास विलोचनानी ||[5]

अभिज्ञानशाकुंतलम् में ऋषि कण्व ने शकुन्तला को आशीर्वाद दिया की पुत्री शर्मिष्ठा जिस प्रकार ययाति की थी ,उसी प्रकार तू भी पति की अति प्रिय हो। उसने जिस प्रकार पुरु को, उसी प्रकार तू भी सम्राट पुत्र को प्राप्त कर।

ययातिरेव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव |

सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुही ||[6]

महाकवि कालिदास उपमा के चक्रवर्ती सम्राट है। अभिज्ञानशाकुंतलम में शकुन्तला के निष्कलंक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए उसके अंगो की शोभा को प्रकृति के माध्यम से जिस प्रकार से जोड़ा जाता है वह शायद ही अन्यत्र कही देखने को मिले –

अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू |

कुसुममिवलोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्||[7]

अर्थात शकुन्तला के अधर को नए पत्तों के तुल्य लाल बताया है। दोनों भुजाएं कोमल शाखाओं के सदृश हैं। अंगों में फूल की तरह मनोहर यौवन व्याप्त हैं। इसी प्रकार कालिदास के मेघदूत में यक्षिणी के सौन्दर्य की अनुपम उपमा को पढ़कर पाश्चात्य कवि भी अभिभूत हो गए।

तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकितहरिणी प्रेक्षणा निम्ननाभिः|
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रास्तनाभ्यां
या तत्र स्याद्युवति विषये सृष्टिराद्येव धातुः||[8]

अर्थात दुबली पतली युवावस्था को प्राप्त नुकीले दांत वाली ,पके बिम्ब फल के समान निचले होठ वाली,पतली कमर ,भयभीत हरिणी के समान नयन वाली ,गहरी नाभि एवं नितम्ब भार से मंद मंद गति वाली ,स्तनों से कुछ झुकी हुई सी तथा युवतियों में ब्रह्मा की प्रथम रचना सी जो वहां हो उसे मेरी पत्नी समझना।[9]

ऐसे श्लोक युक्त काव्य पर पाश्चात्य कवि विल्सन महोदय कहते है कि मै किसी का परवाह किये बिना मेरा मत यह है कि हमारे पास क्या तो श्रेण्य (classical) कविता और क्या आधुनिक (modern)कविता कही भी ऐसे नमूने नहीं मिलेंगे जिनमे इससे अधिक कोमलता अथवा सुकुमार भावना है। [10]

इस प्रकार महाकवि कालिदास की उपमाएं अद्भुत, अलौकिक, प्राकृतिक, सजीव , आलंकारिक,स्वर्गीय आनंद से युक्त ,मानवीय मनोज्ञता, हृदय भावो की प्रधानता, प्रांजलता , आदर्शरूपता, संगीतात्मकता, अकृत्रिमता, मनोरमता एवं कवित्व की निर्मल धारा से युक्त होने के कारण बरबस ही लोगो को अपनी ओर ध्यानाकृष्ट कर लेती है।

सन्दर्भ

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – डॉ.कपिल देव द्विवेदी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास– वाचस्पति गैरोला
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ.कपिल देव द्विवेदी
4. रघुवंशम्– डॉ श्री कृष्णमणि त्रिपाठी
5. मेघदूतम्– श्री तारिणीश झा

6. मेघूदतम्– डॉ संसार चन्द्र, डॉ महोनदेव पंत

7. मालविकाग्निमित्रम्–मोहनदेव पंत

8. रघुवंशम्– धारादत्त शास्त्री

9. अभिज्ञानशाकुन्तलम्– सुबोधचन्द्र पंत

10. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय